विचार और संस्कृति का मासिक

समयांतर

ISSN 2249 - 0469

असहमति का साहस और सहमति का विवेक

मई, 2020 www.samayantar.com वर्ष : 51, अंक : 8 मूल्य : 30 रुपए

कोविड-19 : महामारी का सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संदर्भ

प्रमोद मीणा, रंजोत, शिवप्रसाद जोशी, प्रमोद कुमार बर्णवाल के लेख और संपादकीय

मीडिया और सरकारी विज्ञापन

नैतिक और आर्थिक पक्ष पर सिद्धार्थ

इस अंक में

राज्यों से रिपोर्ट

केरल मॉडल : सफलता का रहस्य
- धर्मेंद्र प्रताप सिंह

उ.प्र. : ग्रामीण संकट और मजदूर
- अटल तिवारी

मध्य प्रदेश की हकीकत
- जावेद अनीस

बिहार : न घर है न ठिकाना
- चंद्र प्रकाश झा

कूटनीति

इंदिरा गांधी से नरेंद्र मोदी तक
- पंकज बिष्ट

विश्व

क्यूबा : मनुष्यता की परिभाषा
- इमानुद्दीन

अमेरिकी राजनीति : एक उम्मीद का ढल जाना
- अभिषेक श्रीवास्तव

प्रतिरोध की आवाज

हेलिन बोलेक की जीवटता को सलाम
- राजेंद्र भट्ट

समयांतर

स्थापना वर्ष : 1970
पुनर्प्रकाशन: अक्टूबर, 1998 से निरंतर

ISSN 2249-0469

संपादक : **पंकज बिष्ट**

व्यवस्था : **ठाकुर प्रसाद चौबे**
व्यवस्था सहयोग : **सुशील शर्मा**
टाइपसेट : **राधा**

चंदे की दरें
सामान्य : एक वर्ष : रु. 350;
दो वर्ष : **रु.** 600
तीन वर्ष : **रु.** 850;
पांच वर्ष : **रु.** 1350
मित्र : एक वर्ष : **रु.** 500; दो वर्ष : **रु.** 800
तीन वर्ष : **रु.** 1000; पांच वर्ष : **रु.** 1500

छात्रों के लिए :
एक वर्ष : **रु.** 250; दो वर्ष : **रु.** 350
(प्रमाण पत्र प्रस्तुत करने पर)

संस्थाओं के लिए : एक वर्ष : रु. 500.00
(रजिस्टर्ड डाक से मंगवाने के लिए एक वर्ष के कृपया रु. 250 अतिरिक्त भेजें)

विशेष सहयोग
आजीवन : **दस हजार रुपए**
दस वर्ष : **पांच हजार रुपए**

विदेशों में (हवाई डाक से)
एक वर्ष : **25 अमेरिकी डालर**
कृपया चंदा मनीऑर्डर अथवा डिमांड ड्राफ्ट से ही **समयांतर** के नाम भेजें। स्थानीय व बहुनगरीय चेक स्वीकार्य हैं।

बैंकके माध्यम से शुल्क भेजने के लिए
Samayantar Current a/c
No. 27520200000094
IFSC code: BARB0MAYVIH
Bank of Baroda, Mayur Vihar Ph.-I,
Delhi-110091
कृपया रेमिटेंस की सूचना तत्काल ईमेल अथवा एसएमएस से दें।

समयांतर, 79-ए, दिलशाद गार्डन, दिल्ली-110095
फोन : 09868302298 (संपादकीय)
09871403843 (व्यवस्था)

email: samayantar.monthly@gmail.com
samayantar@yahoo.com

नोट : *समयांतर* से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे।

इस अंक में

मई 2020, वर्ष : 51, अंक : 8

संपादकीय

5. **नए विचारों का डर**

समाचार-संदर्भ

7. **'पेशवा राज' में असहमति का दमन** – कृपाशंकर
10. **श्रम अधिकारों पर बढ़ता हमला** – नगेंद्र

महामारी

12. **बीमारी की आड़ में सामाजिक अस्पृश्यता** – प्रमोद मीणा
14. **महामारी का सामाजिक और राजनीतिक संदर्भ** – रंजोत
19. **केरल मॉडल : सफलता का रहस्य** – धर्मेंद्र प्रताप सिंह
21. **ग्रामीण संकट, मजदूर और महामारी** – अटल तिवारी
23. **भाजपा का प्रयोग और मध्य प्रदेश की हकीकत** – जावेद अनीस
25. **क्यूबा ने बताई मनुष्यता की परिभाषा** – इमानुद्दीन
27. **न घर है न ठिकाना** – चंद्र प्रकाश झा
41. **कोरोना संक्रमित विश्व में इंसानी वजूद के मायने**
– शिवप्रसाद जोशी

विचार

28. **मीडिया और सरकारी विज्ञापन** – सिद्धार्थ
33. **नीति और कूटनीति** – पंकज बिष्ट
38. **सियासी महामारियों और अमेरिकी प्रगतिशली राजनीति की सीमाएं**
– अभिषेक श्रीवास्तव

साहित्य और संस्कृति

47. **'चुकाना होगा जो कर्ज है जिंदगी का तुम्हें'**
– राजेंद्र भट्ट

फिल्म

49. **कंटेजियन : पर्दे पर वायरस का कहर और प्रकृति का न्याय**
– प्रमोद कुमार बर्णवाल

आवरण : *तुर्की के लोकप्रिय संगीत-समूह 'ग्रुप योरूम' की गायिका* **हेलिन बोलेक**।
चित्र साभार: ग्रुप योरूम

केरल मॉडल: सफलता का रहस्य

धर्मेंद्र प्रताप सिंह

आज विश्व एक ऐसे अदृश्य वायरस की चपेट में है जिसने महाशक्तियों को भी हिलाकर रख दिया है। चीन के वुहान से निकला कोरोना वायरस यानी कोविड-19 दुनिया के तीस लाख से ज्यादा लोगों को संक्रमित कर चुका है जिनमें से दो लाख से ज्यादा लोगों की मौत हो चुकी है। चीन में ही लगभग पांच हजार लोगों की मृत्यु हो चुकी है। (उपरोक्त आंकड़े 28 अप्रैल, 2020 तक के हैं)। हालांकि चीन ने इस पर काफी हद तक काबू पा लिया है। लेकिन दुनिया के अन्य देशों में इस वायरस के फैलने की गति देखकर आतंक फैला हुआ है। पूरी दुनिया इसको नियंत्रित करने में खुद को असमर्थ पा रही है। लोगों के इससे संक्रमित होने और इससे होने वाली मौतों का आंकड़ा लगातार बढ़ता जा रहा है। अमेरिका और योरोप के कई देशों में इसने भारी तबाही मचा रखी है। एशिया के अनेक देशों में भी इसने तेज गति से अपने पैर पसारे हैं।

भारत में इसका प्रवेश चीन के वुहान से हुआ। केरल का एक छात्र वुहान में मेडिकल की पढ़ाई कर रहा था। वुहान में स्थितियां असामान्य होने पर वह वापस आया। उसके संक्रमित होने की पुष्टि 30 जनवरी, 2020 को हुई। इसके बाद केरल में 'इटली फैमिली' के कारण भी संक्रमण बढ़ा। शुरुआत में केरल में यह बहुत तेज गति से बढ़ा। मार्च के अंतिम सप्ताह तक केरल में सर्वाधिक संक्रमित मामले मिले। इसमें राज्य का कासरगोड जिला सर्वाधिक प्रभावित रहा।

महामारी और केरल की सीख

केरल एक समय इस वायरस से भारत का सर्वाधिक संक्रमित राज्य था जो अब इसके नियंत्रण को लेकर, जिसमें मजबूत सार्वजनिक स्वास्थ्य व्यवस्था की अहम भूमिका रही है, देश और दुनिया के लिए रोल मॉडल बनता दिखाई दे रहा है। समय आ चुका है कि कोरोना से संघर्षरत सरकारी और गैर सरकारी तंत्र विचार करे कि कोरोना संक्रामण के मामले में प्रथम स्थान पर काबिज केरल ने किस तरीके से इस पर नियंत्रण प्राप्त किया जो कि पूरी दुनिया के विकसित राष्ट्र तक नहीं कर पाए।

सबसे पहले इस मुद्दे पर बात होनी चाहिए कि केरल में तेजी से कोरोना संक्रमण के मामले क्यों बढ़े? केरल के कासरगोड और कन्नूर जिले में सर्वाधिक संक्रमित मरीज मिले। यह वे जिले हैं जहां से बड़ी संख्या में लोग खाड़ी देशों (दुबई, कतर, शारजाह आदि) में उसी तरह से जाते हैं जैसे बिहार और उत्तर प्रदेश का जन समुदाय दिल्ली और मुंबई जैसे महानगरों में अपनी आजीविका के लिए जाता है। ये लोग वैश्विक महामारी के संकट में अपने घरों की ओर लौटते रहे। आज केरल के 486 मामलों में से 176 कासरगोड और 115 कन्नूर जिले में हैं (28, 2020 तक की स्थिति)। मैं उस क्षेत्र कासरगोड में रह रहा हूं जहां राज्य के सर्वाधिक मामले मिले। मालाबार तट पर बसा केरल का यह जिला सर्वाधिक पिछड़ा माना जाता है। इस जिले में एक भी मेडिकल कॉलेज नहीं है और चिकित्सकीय सुविधाओं के लिए पड़ोस के जिलों में जाना पड़ता है। केरल का सीमावर्ती जिला होने के कारण इसकी चुनौतियां और अधिक बढ़ जाती हैं। केरल में कोरोना संक्रमितों में से सर्वाधिक कासरगोड के हैं।

कासरगोड का मामला

कासरगोड चर्चा के केंद्र में इसलिए है क्योंकि जो सभी आधुनिक सुविधाओं से लैस महानगर नहीं कर पाए वह इसने कर दिखाया। इसके पीछे यहां के जन समुदाय और कोरोना से बचाव में लगे तंत्र का ईमानदारी से किया गया प्रयास सराहनीय है। मैं उन घटनाओं की ओर संकेत करना चाहूंगा जो यहां पर मुझे देखने को मिलीं। बढ़ते मामलों के बीच जब मैं कार्यालय गया तो एक कर्मचारी ने कहा- 'चिंता की कोई बात नहीं, यू आर सेफ इन केरला। हमें अपने मेडिकल और सरकार पर पूरा भरोसा है। हमने इससे पहले भी अनेक चुनौतियों पर विजय पाई है। हम शीघ्र ही इस पर नियंत्रण कर लेंगे।' केरल वह राज्य है जो जीका, निपाह और बाढ़ जैसी आपदाओं के सामने डट कर खड़ा रहा है। केरल के जन समुदाय का व्यवस्था पर विश्वास वह सबसे महत्त्वपूर्ण कारण है जिसने कोरोना पर लगाम लगाई। कासरगोड में एक माह के भीतर मेडिकल कॉलेज का खुल जाना यह दर्शाता है कि राज्य सरकार कोरोना से निपटने कि लिए किस हद तक तैयार रही है। इस मेडिकल कॉलेज के लिए ठेकेदार और मजदूर बिना मेहनताना अपनी सेवाएं देने को तैयार हैं। यही विश्वास घरों में बर्तन धुलने और सफाई करने वाली महिलाओं के भीतर भी देखने को मिला। केरल के भी लोग निजामुद्दीन में तबलीगी जमात के मरकज में शामिल हुए और उन्होंने प्रशासन को पूरा सहयोग दिया या प्रशासन ने जल्द ही उनकी पहचान पर उन्हें क्वारंटाइन कर दिया। जमात को लेकर यहां का जन समुदाय भी सचेत रहा और उसने प्रशासन को समय पर इनके बारे में जानकारी दी। कहने का आशय यह है कि लॉकडाउन तभी पूर्णतया सफल होगा जब जनमानस, प्रशासन के अधिकारी, चिकित्सा और इस कार्य में लगी मशीनरी सभी एक-दूसरे पर पूर्ण विश्वास और सहयोग करें जो केरल में देखने को मिला है।

राज्य सरकार ने न केवल केंद्र सरकार के सभी सुझावों को स्वीकार किया बल्कि उसका पूरी सख्ती से अनुपालन भी किया। इनमें सामाजिक दूरी (सोशल डिस्टेन्सिंग) के साथ ही डेढ़ लाख से ज्यादा लोगों को न केवल एकांत में रखा गया बल्कि उनकी कड़ी निगरानी भी की गई। इसमें क्वारंटाइन किए गए लोगों की मोबाइल लोकेशन और निगरानी के लिए